स्नातक, हिन्दी, प्रतिष्ठा, प्रथमवर्ष, प्रथम पत्र
" " " एवं — द्वितीय वर्ष, द्वितीय पत्र (चतुर्थ पत्र)

प्रश्न :- नयी कविता की मूल प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालते हुए उसकी नवीनता प्रतिपादित करें।

उत्तर :- नयी कविता संक्रांतिजन्य संत्रास, यातना, टूटन, द्विधा की अनुभूति की वह कविता है, जिसमें रह-रहकर सुन्दर अनागत के आने की आशा, स्वयं को अंधेरे में प्रकाश की तरह जलाकर, फूल की तरह खिलाकर अपने को सार्थक तथा अपने द्वारा युग को मूल्यवान बनाने की आस्था कौंध की तरह लिपट-लिपट जाती है।

ऐतिहासिक दृष्टि से नयी कविता 'दूसरा सप्तक' (१९५१ई) के बाद की कविता को कहा जा सकता है, किन्तु इस ऐतिहासिक क्रम के अतिरिक्त नयी कविता का वास्तविक रूप उस समय प्रतिष्ठित हुआ, जब 'दूसरा सप्तक' के बाद के कवियों ने सारी कविता को 'दूसरा सप्तक' के निकटवर्ती पाते हुए कुछ भिन्नता का अनुभव भी किया।

नयी कविता मूलतः १९५३ई० में 'नये पत्ते' के प्रकाशन के साथ विकसित हुई और डॉ० जगदीश गुप्त तथा डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी के सम्पादन में प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'नयी कविता' (१९५४ई) में सर्वप्रथम अपने समस्त सम्भावित प्रतिमानों के साथ प्रकाश में आयी।

इस काल की कविता का 'नयी कविता' नाम कई कारणों से पड़ा। प्रथम तो यह कि नयी कविता के कवि विषयवस्तु और शिल्प की दृष्टि से अपने पूर्ववर्ती कवियों के साथ तो थे, किन्तु वे स्वयं यह अनुभव कर रहे थे कि 'दूसरा सप्तक' के कवियों द्वारा जहाँ और जिस सीमा तक समस्त काव्य-चेतना पहुँच चुकी थी, नयी कविता उससे आगे की ओर बढ़ चुकी है और इन कवियों की काव्य-चेतना थोड़ी पृथक् भी है।

डॉ० बच्चन सिंह के शब्दों में — "नयी कविता नाम देने का मुख्य

कारण यह है कि कवि अपने को किसी वादग्रस्त शिविर में बन्द नहीं रखना चाहते थे। यों इस नाम के पीछे अंग्रेजी के 'न्यू पोइट्री' काव्यान्दोलन का भी प्रभाव है।"

नयी कविता आज की मानव विशिष्टता से उद्भूत लघु मानव के लघु परिवेश की अभिव्यक्ति की कविता है। वह विशाल मानव-प्रवाह में बहने के साथ-साथ अस्तित्व के यथार्थ को भी स्थापित करना चाहती है, उसके दायित्व का निर्वाह भी करना चाहती है।

डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास' में नयी कविता की अनुभूति और संवेदना पर प्रकाश डालते हुए लिखा है—"नयी कविता में मनुष्य और उसके समग्र अनुभव को पकड़ने का यत्न हुआ है। यों मनुष्य को उसकी सम्पूर्णता में देखने और समझने की प्रतिज्ञा हर नये वैचारिक और रचना-आन्दोलन ने की है..... पर नयी कविता में समग्र मनुष्य की बात ही नहीं कही गयी, वरन् मनुष्य के समग्र अनुभव खंडों को संयोजित किया गया है।"

नयी कविता की मूल स्थापनाओं में चार तत्त्व मुख्य हैं। सर्वप्रथम तो यह कि नयी कविता का विश्वास आधुनिकता में है। दूसरे, नयी कविता जिस आधुनिकता को स्वीकार करती है, उसमें वर्जनाओं और कुण्ठाओं की अपेक्षा मुक्त यथार्थ का समर्थन है। तीसरे, इस मुक्त यथार्थ का साक्षात्कार वह विवेक के आधार पर करना अधिक न्यायोचित मानती है। और चौथा, यह कि इन तीनों के साथ-साथ वह क्षण के दायित्व और नितान्त समसामयिकता के दायित्व को स्वीकार करती है।

जीवन के प्रवाह में उसकी सन्दर्भयुक्त अभिव्यक्ति नयी कविता का भावबोध है। सौन्दर्य-बोध की दृष्टि से नयी कविता सौन्दर्य

को यथार्थ से पृथक् वस्तु नहीं मानती है। यथार्थ का क्रियाशील तत्त्व सौन्दर्य के आयामों को निर्धारित एवं परिमार्जित करता है। इसलिए नयी कविता का सौन्दर्यवाद बुद्धिवाद को भी स्वीकार करता है।

उपर्युक्त कतिपय कारणों से कुछ लोगों को नयी कविता मात्र चमत्कारिक लगती है, तो कुछ को रस-हीन। वस्तुतः वे उन नये तत्वों को नहीं देख पाते, जो आज की मानव-अनुभूतियों के साथ उनके परिवेश में विद्यमान हैं और जिनके प्रति उसका दायित्व है।

डॉ० नामवर सिंह ने अपनी पुस्तक 'कविता के नये प्रतिमान' में लिखा है— "महाभारत के बाद अर्जुन का गांडीव जिस तरह दस्युओं के सम्मुख व्यर्थ हो गया था, उसी प्रकार नयी कविता के समक्ष पुरानी अनुभूतियों से निर्मित सहृदयता की विफलता निश्चित है।"

वस्तुतः नयी कविता न तो मात्र चमत्कारिक है और न रूपवादी। उसका मूलस्वर अज्ञेय की 'सोनमछली' शीर्षक इस प्रसिद्ध कविता से समझा जा सकता है:—

"हम निहारते रूप,
काँच के पीछे
हाँप रही है मछली।
रूप-तृषा भी
(और काँच के पीछे)
है जिजीविषा।"

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि नयी कविता का आग्रह उस विशेष तत्व पर है, जो मानव-व्यक्तित्व की स्थापना और उसकी उपयोगिता से विकसित होता है, जो समस्त विद्रूपताओं और कटुताओं के बावजूद मनुष्य को उसकी मूल मर्यादा के प्रति, निजत्व और अस्तित्व के प्रति जागरूक रखना चाहता है।

प्रस्तुति - डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य (Asst. Prof.)
हिन्दी विभाग.
डी० बी० कॉलेज, जयनगर
मधुबनी (बिहार)